पूर्व-सूचना समझता था और मन-ही-मन बहुत खुश होता था ।

एक दिन उसके ताँगे में बैठे दो बैरिस्टर, नए विधान की बहुत कड़ी आलोचना कर रहे थे और वह खामोशी से उनकी बातें सुन रहा था । उनमें से एक, दूसरे से कह रहा था – 'नए कानून का दूसरा हिस्सा फेडरेशन है, जो मेरी समझ में अभी तक नहीं आया । ऐसा फेडरेशन दुनिया की तारीख में आज तक न सुना, न देखा गया है । सियासी नजरिए से भी यह फेडरेशन बिलकुल गलत है, बल्कि यों कहना चाहिए कि यह फेडरेशन है ही नहीं ।'

उन बैरिस्टरों के बीच जो बातचीत हुई, क्योंकि उसमें ज्यादातर शब्द अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मंगू, सिर्फ ऊपर के जुमले को ही किसी कदर समझ पाया और उसने ख्याल किया, ये लोग हिंदुस्तान में नए कानून के आने को बुरा समझते हैं और नहीं चाहते कि इनका वतन आजाद हो । चुनांचे इस ख्याल के असर में उसने कई बार उन दो बैरिस्टरों को हिकारत भरी नजर से देख कर, मन-ही-मन कहा–'टोडी बच्चे !'

जब कभी वह किसी को दबी जबान में 'टोडी बच्चा' कहता, तो दिल में यह महसूस करके खुश होता था कि उसने इस नाम को सही जगह इस्तेमाल किया है और यह कि उसमें शरीफ आदमी और 'टोडी बच्चे' में फ़र्क करने की 'योग्यता' है ।

इस घटना के तीसरे दिन वह गवर्नमेंट कॉलेज के तीन विद्यार्थियों को अपने ताँगे में बैठा कर मजंग जा रहा था कि उसने तीनों लड़कों को आपस में ये बातें करते सुना – 'नए कानून ने मेरी उम्मीदें बढ़ा दी हैं, अगर '–' साहब एसेंबली के मेंबर हो गए तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी जरूर मिल जाएगी ।'

'वैसे भी बहुत-सी जगहें और निकलेंगी । शायद इसी गड़बड़ में हमारे हाथ भी कुछ आ जाए ।'

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं ।'

'वे बेकार ग्रैजुएट, जो मारे-मारे फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कमी होगी ।'

इस बातचीत ने उस्ताद मंगू के दिल में नए कानून का महत्त्व और भी बढ़ा दिया और वह उसको ऐसी चीज समझने लगा, जो बहुत चमकती हो । 'नया कानून.....।' वह दिन में कई बार सोचता, 'यानी कोई नई चीज ।' और हर बार उसकी नजरों के सामने अपने घोड़े का वह नया साज आ जाता, जो उसने दो बरस हुए, चौधरी खुदा बख्श से, बड़ी अच्छी तरह ठोंक-बजा कर खरीदा था । उस साज पर, जब वह नया था, जगह-जगह लोहे की निकल चढ़ी हुई कीलें चमकती थीं और जहाँ-जहाँ पीतल का काम था, वह तो सोने की तरह चमकता था । इस लिहाज से भी 'नए कानून' का चमकता-दमकता होना जरूरी था ।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मंगू ने नए विधान के पक्ष और विपक्ष में बहुत कुछ सुना ।

पर उसके बारे में जो खाका वह अपने मन में बना चुका था, उसे वह बदल न सका । वह समझता था कि पहली अप्रैल को नए कानून के आते ही सब मामला साफ हो जाएगा और उसको विश्वास था कि उसके आने पर जो चीजें नजर आएँगी, उनसे उसकी आँखों को जरूर ठंडक पहुँचेगी ।

आखिर मार्च के इकतीस दिन खत्म हो गए और अप्रैल के शुरू होने में रात के चंद खामोश घंटे बाकी रह गए । मौसम आम दिनों की बनिस्बत ठंडा था और हवा में ताजगी थी ।

पहली अप्रैल को सुबह-सवेरे उस्ताद मंगू उठा और अस्तबल में जा कर उसने ताँगे में घोड़े को जोता और बाहर निकल गया । उसकी तबियत आज असाधारण रूप से प्रसन्न थी ।.....वह आज नए कानून को देखने वाला था ।

उसने सुबह के सर्द धुँधलके में, कई तंग और खुले बाजारों का चक्कर लगाया, मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई । आसमान की तरह पुरानी । उसकी निगाहें आज खास तौर पर नया रंग देखना चाहती थीं, पर सिवाय उस कलगी के, जो रंग-बिरंगे परों से बनी थी और उसके घोड़े के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीजें पुरानी नजर आती थीं । यह नई कलगी उसने नए कानून की खुशी में इकतीस मार्च को चौधरी खुदा बख्श से साढ़े चौदह आने में खरीदी थी ।

घोड़े के टापों की आवाज ; काली सड़क और उसके आस-पास थोड़ा-थोड़ा फासला छोड़ कर लगाए हुए बिजली के खंभे ; दुकानों के बोर्ड ; उसके घोड़े के गले में पड़े हुए घुँघरुओं की झनझनाहट; बाजार में चलते-फिरते आदमी–इनमें कौन-सी चीज नई थी ? जाहिर है कि कोई भी नहीं ! लेकिन उस्ताद मंगू निराश नहीं हुआ ।

'अभी बहुत सबेरा है । दुकानें भी तो सब-की-सब बंद हैं ।' इस ख्याल ने उसे तसकीन दी । इसके अलावा, वह यह भी सोचता था, 'हाईकोर्ट में तो नौ बजे के बाद ही काम शुरू होता है । अब इससे पहले नया कानून क्या नजर आएगा ?'

जब उसका ताँगा गवर्नमेंट कॉलेज के दरवाज़े के करीब पहुँचा तो कॉलेज के घड़ियाल ने बड़े घमंड से नौ बजाए । जो विद्यार्थी कॉलेज के बड़े दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, खुश-पोश थे, पर उस्ताद मंगू को न जाने क्यों उनके कपड़े मैले-मैले-से नजर आए । शायद इसका कारण यह था कि उसकी निगाहें आज आँखों को चौंधिया देने वाले किसी जलवे का इंतजार कर रही थीं ।

ताँगे को दाएँ हाथ मोड़ कर, वह थोड़ी देर के बाद फिर अनारकली में चला आया । बाजार की आधी दुकानें खुल चुकी थीं और अब लोगों की आमद-रफ्त भी बढ़ गई थी । हलवाई की दुकानों पर ग्राहकों की खूब भीड़ लगी थी । मनिहारी वालों की नुमायशी चीजें शीशे की आलमारियों में से, लोगों को अपनी ओर खींच रही थीं और बिजली के तारों पर कई कबूतर आपस में लड़-झगड़ रहे थे, पर उस्ताद मंगू के लिए इन तमाम चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी ।...

था, मुड़ कर ताँगे के पायदान की तरफ कदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मंगू को और उसकी निगाहें चार हुईं और ऐसा लगा कि एक साथ आमने-सामने की बंदूकों से गोलियाँ निकलीं और आपस में टकरा कर, आग का एक बगूला बन कर, ऊपर को उड़ गईं ।

उस्ताद मंगू, जो अपने दाएँ हाथ से लगाम के बल खोल कर ताँगे से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खड़े गोरे को यों देख रहा था, जैसे वह उसके वजूद के जर्रे-जर्रे को अपनी निगाहों से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी पतलून पर से अनदेखी चीजें झाड़ रहा था, जैसे वह उस्ताद मंगू के इस हमले से अपने वजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो ।

गोरे ने सिगरेट का धुआँ निगलते हुए कहा–'जाना माँगटा या फिर गड़बड़ करेगा ?'

'वही है ।' ये शब्द उस्ताद मंगू के दिमाग में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अंदर नाचने लगे । 'वही है ।' उसने ये शब्द अपने मुँह के अंदर दोहराए और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा, जो उसके सामने खड़ा था, वही है, जिससे पिछले बरस उसकी झड़प हुई थी और उस खाह-म-खाह के झगड़े में, जिसकी वजह गोरे के दिमाग में चढ़ी हुई शराब थी, उसे लाचार हो कर बहुत-सी बातें सहनी पड़ी थीं । उस्ताद मंगू ने गोरे का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उड़ा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था । उसको पता था, इस तरह के झगड़ों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवानों पर ही गिरता है ।

उस्ताद मंगू ने पिछले बरस की लड़ाई और पहली अप्रैल के नए कानून पर गौर करते हुए, गोरे से पूछा–'कहाँ जाना माँगटा है ?' उस्ताद मंगू के लहजे में चाबुक-ऐसी तेजी थी ।

गोरे ने जवाब दिया–'हीरा मंडी ।'

'किराया पाँच रुपए होगा ।' उस्ताद मंगू की मूँछें थरथराईं ।

यह सुन कर गोरा हैरान हो गया । वह चिल्लाया–'पाँच रुपए । क्या टुम.....?'

'हाँ-हाँ पाँच रुपए ।' यह कहते हुए उस्ताद मंगू के बालों-भरे दाहिने हाथ ने भिंच कर एक भारी घूँसे का रूप ले लिया । 'क्यों, जाते हो या बेकार बातें बनाओगे', उस्ताद मंगू का लहजा और भी ज्यादा सख्त हो गया ।

गोरा पिछले वर्ष की घटना का ख्याल कर के, उस्ताद मंगू के सीने की चौड़ाई नजरअंदाज कर चुका था । वह सोच रहा था–इसकी खोपड़ी फिर खुजला रही है । हौसला बढ़ाने वाले इस ख्याल के तहत, वह ताँगे की ओर अकड़ कर बढ़ा और अपनी छड़ी से उसने उस्ताद मंगू को ताँगे से नीचे उतरने का इशारा किया ।

बेंत की वह पालिश की हुई, पतली-सी छड़ी, उस्ताद मंगू की मोटी रान के साथ दो-तीन बार छुई । उसने बड़े नाटे कद के गोरे को ऊपर से नीचे देखा, जैसे वह अपनी निगाहों के भार

से ही उसे पीस डालना चाहता हो । फिर उसका घूँसा, कमान में तीर की तरह ऊपर को उठा और पलक झपकते ही गोरे की ठोड़ी के नीचे जम गया । धक्का देकर उसने गोरे को परे हटाया और नीचे उतर कर उसे धड़ाधड़ पीटना शुरू कर दिया ।

गोरा हक्का-बक्का रह गया और उसने इधर-उधर सिमट कर, उस्ताद मंगू के वजनी घूँसों से बचने की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मंगू की हालत पागलों-सी हो गई है और उसकी आँखों से अंगारे बरस रहे हैं तो उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया । उसकी चीख-पुकार ने उस्ताद मंगू की बाँहों का काम और भी तेज कर दिया । वह गोरे को जी भर के पीट रहा था और साथ-साथ यह भी कहता जाता था – 'पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फूँ.....पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फूँ.....अब हमारा राज है बच्चा ।'

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से गोरे को उस्ताद मंगू की पकड़ से छुड़ाया । उस्ताद मंगू उन दो सिपाहियों के बीच खड़ा था । उसकी चौड़ी छाती, फूली हुई साँस की वजह से ऊपर-नीचे हो रही थी । मुँह से झाग बह रहा था और अपनी मुस्कराती हुई आँखों से हैरत-जदा भीड़ की तरफ देख कर, वह हाँफती हुई आवाज में कह रहा था – 'वो दिन गुजर गए, जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाया करते थे ।.....अब नया कानून है मियाँ, नया कानून ।'

और बेचारा गोरा अपने बिगड़े हुए चेहरे के साथ, बेवकूफों की तरह, कभी उस्ताद मंगू की तरफ देखता और कभी भीड़ की तरफ ।

उस्ताद मंगू को पुलिस के सिपाही थाने में ले गए । रास्ते में और थाने के अंदर कमरे में वह 'नया कानून, नया कानून' चिल्लाता रहा, पर किसी ने एक न सुनी ।

'नया कानून, नया कानून क्या बक रहे हो ! ....कानून वही है–पुराना !' और उसको हवालात में बंद कर दिया गया ।